लोकसंगीत के शत्रु के रूप में उभरते रियल्टी शोध

डा0 वन्दना
पता :– 185 नीती बाग,
इन्द्रापुरम, आगरा 282001

यह सर्वविदित है कि लोकसंगीत का स्वरुप वैदिककाल से ही प्रचलित है। वैदिककाल में लोकसंगीत को ष्लौकिक संगीतष कहा जाता था। प्राचीनकाल से ही लोकसंगीत का स्वरुप अत्यंत समृद्ध एवं उन्नत है। लोकसंगीत अर्थात ष्लोक का लोक के लिए लोक द्वारा निर्मित संगीतष। वह लोकसंगीत ही है जो प्राचीनकाल से ही सामान्यजन के सुख एवं दुःख मे उनकी अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है। आज भी जब किसी घर मे संतान पैदा होती है अथवा विवाहोत्सव होता है तो बधाये गाये जाते है , जच्चा , बन्ना– बन्नी गाये जाते हैं तथा सावन मे कजरी, चैती, फागुन में होरी आदि गीत गाये जाते रहे हैं।

स्वतंत्रता के बाद सरकार द्वारा लोकसंगीत के प्रचार–प्रसार के लिए बहुत से कदम उठाये गये। कुछ ऐसे प्रयास भी किए गए जिनसे विद्यार्थियों व संगीतज्ञों का ध्यान लोकसंगीत की ओर आकर्षित हो। कई पुरुस्कारो की घोशणा की गई अकादमियों की स्थापना की गई। आका ावाणी द्वारा गाँव–गाँव से लोकगीतों का प्रसारण कर इसके विकास व प्रचार को बढ़ावा दिया गया। किन्तु फिर भी समय के साथ–साथ लोकसंगीत के साथ न्याय नहीं हो पा रहा है। वह अपने मौलिक और रूहानी अस्तित्व को बचा नहीं पा रहा है। इसी कारण संगीत के अधिकांश चिन्तक और विद्वान भारतीय लोकसंगीत के भविष्य के प्रति अति संवेदनशील हैं।

आज के बदलते युग मे लोकसंगीत को पछाड़ने की राह मे अग्रसर हो रहे हैं . ष्दूरदर्शन पर प्रसारित रियलिटी शोजष। दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर प्रसारित श्इंडियन आइडलश , श्द वॉयसश , श्एयरटेल सुपर सिंगरश , सा रे ग म पश , श्दिल है हिंदुस्तानीश , श्स्टार वोइस ऑफ इंडियाश इत्यादि रियलिटी शोज फिल्मी गीतों का आधार लेकर एक से बढ़कर एक कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। फिल्मसंगीत तो पहले से ही लोकसंगीत के लिए एक चुनौती रहा है, किन्तु अब उभरती सांगीतिक प्रतिभा की खोज में किये जा रहे ये प्रसारण लोकसंगीत विधा के लिए एक जबरदस्त झटका साबित हो रहे हैं।

भदूरद ान ;जमसमअपेपवदद्ध ने पिछले कुछ वर्शों से फिल्मी गीतों का आधार लेकर सांगीतिक प्रतिभा की खोज– रूप में सोनी चैनल से इंडियन आइडल जैसे रियलिटी भाो का आरम्भ किया जिसमें न केवल संगीत का आइडल चुना गया बल्कि व्यवसायिक दृश्टि से भी यह बम्पर भाो साबित हुआ। इस भाो में दे ा भर के युवा और युवतियों को अपनी–अपनी सांगीतिक प्रतिभा का कमाल दिखाने का खुला आमन्त्रण मिला। अनुमलिक, सोनू निगम और फरहा जैसी फिल्मी हस्तियों की टोली ने निर्णायकों का पद सम्भाला। दूरद ान का यह प्रसारण फिल्मसंगीत के गायक गायिकाओं व चुनाव के लिए एक सांगीतिक प्रतियोगिता के रूप में उभरकर सामने आया। भइंडिअन आइडल और भसा रे ग म प जैसे कार्यक्रमों की आज धूम मची हुई है।

इन रियलिटि भाोज की बदौलत आर्थिक रूप से दूरद ान की बल्ले–बल्ले है तथा ये सामान्य जन को संगीत के प्रति आकर्शित भी करते हैं। किन्तु ये आकर्शण पूर्णतया फिल्मसंगीत की ओर ही है। यह सर्वविदित हे कि इन भाोज में टिकने व जीतने के लिए रियाज अत्यन्त आव यक है किन्तु आज के युवा को फिल्मसंगीत के रियाज के लिए किसी गुरू की आव यकता ही प्रतीत नहीं होती। वे तो केवल गानो को मोबाइल में डाउनलोड किये, कानो में हेडफोन लगााकर ही फिल्मी गीतों का अभ्यास कर लेते हैं। आज की युवा पीढी को फिल्मसंगीत इसीलिए अधिक आकर्शित लगता है क्योंकी इसके लिए न तो उन्हें किसी गुरू की आव यकता है और न ही गीत ढूढनें की कठिनाई।

अन्य पहलू से देखें तो लोकसंगीत प्रतिभा की खोज में दूरद ान को आर्थिक रूप से अधिक फायदा नजर नहीं आता। क्योंकि लोकसंगीत गाने के लिए उन्हें अधिक अभ्यास करना होगा। इसके अलावा फिल्मसंगीत का प्रचार अधिक होने के कारण गीतों का चयन करना भी सरल है वहीं दूसरी ओर लोक गीतों का संरक्षण व प्रचार कम होने से लोकसंगीत के प्रति आकर्शण भी कम है।

यद्यपि कुछ लोगो के मतानुसार दूरद ान हमारे–आपके बच्चों के साथ जुआ खेल रहा है। उनकी लालसाओं को हवा दे रहा है, किन्तु फिर भी आज का युवा वर्ग ऐसा समझ रहा है कि गायक गायिकाओं की चयन प्रक्रिया में न्याय व ईमानदारी है इसलिए नित्य निरन्तर इसके प्रतिभागियों की संख्या में बढोतरी होती जा रही है।

दूरद ान एक दृ य श्रृवय माध्यम होने के कारण इसका प्रभाव अधिक व्यापक है। अगर समय रहते दूरद ान ने लोकसंगीत की ओर ध्यान नहीं दिया तथा इसके प्रचार प्रसार के लिए रियलिटिज भाोज जैसे कदम नहीं उठाये तो संगीत की यह विधा लुप्त हो जायेगी।